अंडमान सागर में उठती नई लहरें

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

लेखक- सी. राजा मोहन (निदेशक, दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान, सिंगापुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय)

13 नवम्बर, 2018

इसका रणनीतिक और आर्थिक महत्त्व बढ़ गया है और इस परिवर्तन से निपटने में नई दिल्ली को धीमा नहीं पड़ना चाहिए।

इस साल सिंगापुर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूसरी यात्रा अंडमान सागर और बंगाल की खाड़ी में दोनों देशों के बीच सबसे बड़ी नौसेना अभ्यास द्वारा अच्छी तरह से तैयार की गई है। सिम्बेक्स (Simbex) नामक अभ्यास 25 साल पहले शुरू किया गया था क्योंकि भारत ने उसी वक्त तथाकथित लुक ईस्ट पॉलिसी शुरू की थी जिसमें दक्षिण पूर्व एशिया के साथ एक नवीनीकृत आर्थिक, राजनीतिक और सैन्य जुड़ाव की आवश्यकता थी। दोनों पक्ष उम्मीद करते हैं कि इन द्विपक्षीय अभ्यासों में अंतत: अन्य दक्षिण पूर्व एशियाई देशों की भागीदारी शामिल होगी और भारत-प्रशांत के केंद्र में एक सहकारी सुरक्षा ढांचे का आधार बन जाएगा।

जून में सिंगापुर की अपनी पिछली यात्रा के दौरान, मोदी ने भारत-प्रशांत के लिए शांगरी ला वार्ता के लिए भारत के व्यापक दृष्टिकोण को रेखांकित किया, जो एक वार्षिक मंच है और यह क्षेत्र की रक्षा प्रतिष्ठानों को एक साथ लाता है। देखा जाये तो भारत-प्रशांत पर प्रधानमंत्री के भाषण ने भारत के विश्वव्यापी केंद्र में नए भू-राजनीतिक निर्माण को स्थापित करने में काफी मदद की है।

लेकिन इसके साथ ही भारत-प्रशांत के विशिष्ट उप-क्षेत्रों पर चर्चा करने के बजाय इसमें आत्म निर्देशात्मक बहस करने की पारंपरिक भारतीय प्रवृत्ति आ गई है। निश्चितरूप से, भारत-प्रशांत की अनूठापन प्रशांत और हिंद महासागर तट के बढ़ते रणनीतिक और आर्थिक परस्पर निर्भरता को पहचानने में निहित है जिसे हमने हाल ही में अलग-अलग कई रूप में देखा है।

इसके अनुसार, इंडो-पैसिफिक भी कई उप-क्षेत्रों का योग है जिसमें मलक्का स्ट्रेट्स के पूर्व में पूर्वी चीन सागर, दक्षिण चीन सागर और दक्षिण प्रशांत शामिल हैं, साथ ही इसके पश्चिम में बंगाल की खाड़ी, अरब सागर और वाटर्स ऑफ अफ्रीका शामिल है। इन उप-क्षेत्रों में भारत जो करता है वह भारत-प्रशांत पर अमूर्त बहस से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

आने वाले सालों में अंडमान सागर जैसा एक उप-क्षेत्र द्वारा भारत को व्यस्त रखने की संभावना है। अंडमान सागर पश्चिम में द्वीपों के अंडमान और निकोबार श्रृंखला, उत्तर में म्यांमार, पूर्व में थाई-मलय प्रायद्वीप और दक्षिण में सुमात्रा द्वीप से घिरा हुआ है। दक्षिण चीन सागर वह बिंदु है जो हिंद महासागर व प्रशांत महासागर को मलक्का जल संधि के माध्यम से जोड़ता है।

आधुनिक युग की शुरुआत में, पुर्तगालियों, डच, फ्रेंच और अंग्रेजों से जुड़े भूगर्भीय मुक़ाबलों में से कई अंडमान सागर के पानी में हुए थे। 19वीं शताब्दी की शुरुआत में हिंद महासागर में ब्रिटिश विरासत का एकीकरण और फ्रांस (इंडो-चीन में) और नीदरलैंड्स (ईस्ट इंडीज में, जिसे इंडोनेशिया के नाम से जाना जाता है) के साथ समझौते ने अंडमान सागर को एक सुस्थिर अवस्था में छोड़ दिया था।

लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान विस्तारित शांति तब बिखर गई जब जापान ने पूर्वी एशिया के बड़े हिस्सों पर कब्जा कर लिया, सिंगापुर से ग्रेट ब्रिटेन को बेदखल कर दिया गया और बर्मा के माध्यम से पूर्वोत्तर भारत की ओर बढ़ गया। इंपीरियल जापान ने अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पर भी कब्जा कर लिया। आक्रामकता को दूर करने के लिए इसे एक बड़े सहयोगी प्रयास की आवश्यकता थी।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, अंडमान सागर और बंगाल की खाड़ी शीत युद्ध के दौरान वाशिंगटन और मॉस्को के बीच सत्ता के खेल के बीच फंस कर रह गई। अब, चीन और बीजिंग के नौसेना शक्ति के प्रक्षेपण का उदय अपने क्षेत्र से आगे बढ़कर अंडमान सागर को इस खेल में वापस ले आया है।

उदाहरण के लिए इस क्षेत्र में कुछ हालिया विकास पर विचार करते हैं। पिछले हफ्ते, बीजिंग ने बंगाल की खाड़ी में म्यांमार के अराकान तट पर क्यौक्कू (Kyaukpyu) में एक गहरे पानी के बंदरगाह के निर्माण पर नाएप्यीडॉ (Naypyidaw) के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए।

यह बंदरगाह चीन-म्यांमार इकोनॉमिक कॉरिडोर का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा बन जाएगा, जो कि क्यौक्कू को रेलवे और राजमार्गों के माध्यम से दक्षिणपश्चिम चीन के युन्नान प्रांत से जोड़ देगा।

चीन ने पहले से ही एक तेल और गैस पाइपलाइन प्रणाली बनाई है जो कि क्यौक्कु से हाइड्रोकार्बन को अंतर्देशीय चीन में ले जाती है। क्यौक्कु बंदरगाह चीन और बर्मा के बीच कई सालों से चर्चा में है। ऋण जाल में फँस जाने के डर से नाएप्यीडॉ को मजबूरन इस परियोजना को 7.2 अरब डॉलर से 1.3 अरब डॉलर तक सीमित करना पड़ा।

पिछले हफ्ते थाईलैंड ने क्रा कैनाल के व्यवहार्यता अध्ययन को भी आदेश दिया, जिस पर तीन शताब्दियों से अधिक समय से बहस हुई है। नहर Kra Isthmus के माध्यम से कटौती करेगा और अंडमान सागर को थाईलैंड की खाड़ी से जोड़ देगा। हालांकि परियोजना की लागत और स्थायित्व ने हमेशा निवेशकों को रोक दिया है, लेकिन इस परियोजना को लॉन्च करने के लिए चीन से ताजा धक्का लग रहा है।

अंडमान सागर में बढ़ती चीनी प्रोफाइल चीन-म्यांमार इकोनॉमिक कॉरिडोर और क्रा नहर जैसे रणनीतिक बुनियादी ढांचे के निर्माण तक सीमित नहीं है जो बीजिंग को मलक्का स्ट्रेट्स पर अपनी वर्तमान निर्भरता को कम करने और सीधे हिंद महासागर तक पहुंचने की अनुमति देती है।

इसकी सैन्य प्रोफाइल भी बढ़ रही है। बीजिंग ने थाईलैंड और बांग्लादेश में पनडुब्बियों को बेच दिया है और अंडमान सागर के अन्य छोटे राज्यों के साथ इसका सैन्य सहयोग तेजी से बढ़ गया है। पिछले महीने, चीन ने थाईलैंड और मलेशिया के साथ नौसेना अभ्यास किया है।

जैसे-जैसे अंडमान सागर का जल अशांत होते जाएगा, भारत अंडमान और निकोबार द्वीप श्रृंखला में नागरिक और सैन्य बुनियादी ढांचे के विकास में तेजी लाता जाएगा। भारत ने अंडमान के तटीय क्षेत्रों के साथ राजनीतिक जुड़ाव को भी बढ़ाया है। लेकिन अंडमान सागर में तेजी से हो रहे रणनीतिक परिवर्तन से निपटने के लिए दिल्ली की गति बहुत धीमी हो सकती है।

GS World टीम...

SIMBEX 2018

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में भारत और सिंगापुर के बीच SIMBEX (Singapore & India Maritime Bilateral Eñercise) युद्ध अभ्यास शुरू हुआ है।
- यह इस अभ्यास का 25वां संस्करण है। इस अभ्यास का आयोजन 10 से 21 नवम्बर, 2018 के दौरान किया जा रहा है।
- इस युद्ध अभ्यास का आयोजन कई चरणों में अंडमान सागर तथा बंगाल की खाड़ी में किया जा रहा है। यह 1994 के बाद का सबसे बड़ा SIMBEX अभ्यास है।

क्या है?

- इस अभ्यास में कई प्रकार की गतिविधियाँ की जाएँगी, इसमें मिसाइल फायरिंग, हैवी वेट टारपीडो, मध्यम दूरी की तोप, पनडुब्बी रोधी राकेट फायरिंग, एडवांस्ड एंटी-सबमरीन वारफेयर अभ्यास, पनडुब्बी बचाव कार्य, एकीकृत थल तथा हवाई युद्ध अभ्यास, नाट ऑपरेशन तथा क्रॉस डेक हेलीकाप्टर उड़ान इत्यादि शामिल हैं।
- इस अभ्यास के शुरुआती चरण का आयोजन पोर्ट ब्लेयर में किया जायेगा, इसके बाद अगले चरण का आयोजन अंडमान सागर में किया जायेगा।
- इस अभ्यास के दूसरे चरण का आयोजन विशाखापत्तनम में किया जायेगा। इस अभ्यास के अंतिम चरण का आयोजन बंगाल की खाड़ी में किया जायेगा।
- इस अभ्यास में भारतीय नौसेना द्वारा मिसाइल और टारपीडो फायरिंग का सर्वाधिक उपयोग किया जायेगा, इतनी मात्रा में टारपीडो व मिसाइल फायरिंग का उपयोग भारतीय नौसेना ने किसी विदेशी नौसेना के साथ आज तक नहीं किया है।
- भारतीय नौसेना की ओर से इस अभ्यास में रणवीर श्रेणी के विध्वंसक पोत आईएनएस रणविजय, दो प्रोजेक्ट 17 बहुभूमिका वाली स्टेल्थ फ्रिगेट (आईएनएस सतपुड़ा और आईएनएस सह्याद्री), प्रोजेक्ट 28 ASW कार्वेट (आईएनएस कदमत्त), प्रोजेक्ट 25A मिसाइल कार्वेट शामिल है।
- इसके अलावा, आईएनएस कर्च, OPV सुमेधा और आईएनएस सुकन्या, फ्लीट सपोर्ट शिप, आईएनएस शक्ति, सिंधुघोष श्रेणी की पनडुब्बी, आईएनएस सिन्धुकिरती, P8I लम्बी दूरी का गश्ती जहाज, INAS 312, डोर्निएर 228 समुद्री गश्ती एयरक्राफ्ट, UH3H, सीकिंग 42 B, सीकिंग 42 C तथा चेतक हेलीकाप्टर इत्यादि हिस्सा ले रहे हैं।
- इस अभ्यास में सिंगापुर नौसेना की ओर से दो फोरमिडेबल श्रेणी की स्टेल्थ फ्रिगेट RSS फॉरमिडेबल व RSS स्टेडफास्ट, दो मिसाइल कार्वेट – RSS विगौर व RSS वेलियंट, एक लिटोरल मिशन वेसल – RSS यूनिटी, आर्चर श्रेणी पनडुब्बी, RSS स्वोर्ड्समैन, स्विफ्ट रेस्क्यू नामक समुद्री बचाव वेसल, फोक्कर F50 समुद्री एयरक्राफ्ट, S70B हेलीकाप्टर तथा स्कैन ईगल नामक मानव रहित विमान हिस्सा ले रहे हैं।

क्या है क्रा कैनाल प्रोजेक्ट?

- क्रा कैनाल प्रोजक्ट थाई सरकार का महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट रहा है। थाईलैंड की भौगोलिक स्थिति ऐसी है, जहां उसका एक हिस्सा दक्षिण चीन सागर में खुलता है तो दूसरा हिंद महासागर में।
- थाईलैंड पनामा नहर की तरह बीचों-बीच से एक नहर बनाना चाहता है। यह नहर दक्षिणी चीन सागर को सीधा हिंद महासागर से जोड़ देगी।
- थाईलैंड को उम्मीद है कि यह प्रोजक्ट उसके लिए गेम चेंजर हो सकता है। इससे सिंगापुर के रास्ते हिंद महासागर को जाने वाले जहाज सीधा इस नहर से होकर गुजरेंगे।
- इससे उसे बड़ा रेवेन्यू हासिल हो सकता है।

GS World Committed to Excellence

पृष्ठभूमि

- थाईलैंड इस प्रोजेक्ट के लिए 200 सालों से कोशिश कर रहा है। इसको लेकर पहली बार चर्चा 1677 में हुई थी। यही नहीं तब के थाई शासक ने इसके लिए स्वेज नहर का निर्माण करने वाले फ्रेंच इंजीनियर दे लामार को सर्वे के लिए भी बुलाया था।
- बाद में तकनीकी कारणों के चलते पूरा आइडिया ठंडे बस्ते में डाल दिया गया।
- 19वीं सदी में थाई राजपरिवार ने इसे फिर से डेवलप करने की कोशिश की, लेकिन ब्रिटेन के आब्जेक्शन के चलते यह संभव नहीं हो पाया।
- बाद में 1990 के दशक में इस पर फिर से चर्चा शुरू हुई, हालांकि बजट के चलते थाई सरकार इसमें हाथ डालने से कतराती रही।

भारत के चिंता का कारण?

- यह नहर बनकर तैयार हुई तो चीन हिंद महासागर में भारत के लिए चुनौती पेश कर सकता है।
- करीब 102 किलोमीटर लंबी नहर 400 मीटर चौड़ी और 25 मीटर गहरी होगी।
- रक्षा जानकारों के मुताबिक, सैद्धान्तिक तौर पर देखें तो यह नहर भारत के लिए भी लाभदायक होगी। क्योंकि इसके बन जाने के बाद उसे दक्षिण पूर्व एशिया के कई देशों तक आसान पहुंच मिलेगी।
- लेकिन पूरे प्रोजेक्ट में चीन का जुड़ाव भारत की सुरक्षा के लिए खतरा है। इस तरह के प्रोजेक्ट में चीन का पिछला रिकॉर्ड भारत की चिंता बढ़ा रहा है।
- इसके चलते दक्षिणी चीन सागर से भारत के प्रभाव वाले हिंद महासागर के बीच कम से कम 1200 किलोमीटर की दूरी कम हो जाएगी।
- मतबल खतरे के समय चीन के लड़ाकू पोत पहले के मुकाबले कुछ दिन के मुकाबले अब मात्र कुछ घंटो में हिंद महासागर में आ सकेंगे।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. 'सिम्बेक्स' के संबंध में निम्नलिखित में से क्या सत्य है?

(a) यह भारत एवं सिंगापुर के मध्य होने वाली समुद्री द्विपक्षीय अभ्यास है।

(b) यह भारत एवं श्रीलंका के मध्य थल सेना द्वारा किया गया आपदा राहत के लिये व्यापक अभ्यास है।

(c) यह अमेरिका से भारत द्वारा आयातित विमान वाहक युद्धक पोत है।

(d) यह चीन द्वारा अंतरिक्ष में प्रक्षेपित उपग्रह है।

2. नाएप्यीडा (Naypyidaw) समझौता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. यह समझौता म्यांमार एवं चीन के मध्य हुआ है।
2. इसके अंतर्गत चीन म्यांमार के अराकान तट पर क्याउपयू (Kyaupyu) में बंदरगाह बनायेगा।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

3. निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र 'मलक्का स्ट्रेट' के पूर्व में स्थित है?

1. पूर्वी चीन सागर
2. बंगाल की खाड़ी
3. अरब सागर
4. दक्षिण चीन सागर

कूट:-

(a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 4 (d) केवल 1, 2 और 4

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. चीन विभिन्न माध्यमों से भारत को निरंतर घेरता जा रहा है जिसे हम नाएप्यीडा (Naypyidaw) समझौता में देख सकते हैं इस संदर्भ में चीन द्वारा भारत के लिए उत्पन्न चुनौतियों की भी चर्चा कीजिए।

(शब्द-250)

नोट :

12 नवम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c) और 2(d) होगा।